भूमिका :

रवीन्द्रनाथ का साहित्य विश्व के विस्तृत फलक पर चर्चा का विषय रहा है, जिसमें रहस्यवाद का बड़ा महत्व है। हिंदी छायावाद की रहस्य भावना कई विद्वानों के अनुसार रवीन्द्रनाथ के पास ऋणी हैं। परन्तु दोनों - महादेवी वर्मा और रवीन्द्रनाथ ठाकुर में भारतीय परम्परा कहीं न कहीं अन्तःस्युत है। दर्शन को काव्य का विषय बनाने का कौशल कबीर को मालूम था। कबीर से रवीन्द्रनाथ परिचित थे। उस परम्परा का निर्वाह दोनों - महादेवी एवं रवीन्द्रनाथ के काव्य में देखने को मिलता है। पर ये दोनों आधुनिक युग के थे। समकालीन होते हुए भी भिन्न भाषाओँ के थे। दोनों में वस्तुगत दृष्टिकोण से समानताएं तो हैं ही भाषिक वैशिष्टय भी सान्तर सामंजस्यपूर्ण है। इन सबका योजनाबद्ध रूप से उद्घाटन मेरे इस शोधकार्य का लक्ष्य है।

हिंदी काव्य में आदिकाल से ही रहस्यवाद की परंपरा चली आ रही है। आधुनिक हिंदी काव्य में रहस्यवाद महत्वपूर्ण विषय के रूप में रहा है और छायावादी काव्यान्दोलन से सम्बद्ध है। छायावाद का प्रमुख वस्तुगत तत्त्व 'रहस्यवाद' है, जो रवीन्द्रनाथ के काव्य विशेषकर 'गीतांजलि' की कविताओं में उपलब्ध है। भारतीय परम्परा में जिसका मूल तत्त्व 'वेद' और उपनिषद में भी आया है। कवयित्री महादेवी रवीन्द्रनाथ से और बंगला काव्य से परिचित थी। इसलिए काफी संभावना है दोनों के काव्य में, रहस्यवाद में साम्य और वैषम्य है। अतः दोनों का तुलनात्मक अध्ययन शोधकार्य के लिए चुना गया।

तत्कालीन भारतवर्ष अलगाववाद, राष्ट्रवाद, संप्रदायवाद आदि समस्याओं से जूझ रहा था। ऐसी स्थिति में कविगुरु रवीन्द्रनाथ भले ही रहस्यवादी भावना से ही क्यों न हो, वे ऐसे विश्व की कल्पना कर रहे थे, जहाँ सत्य और भाईचारे की भावना हो तथा समाज विश्व मानवता के रास्ते पर आगे बढे। महादेवी एवं

रवीन्द्रनाथ कालीन परिस्थितियां आज भी जिन्दा है। अतः दोनों के काव्य में रहस्यवादी चेतना का तुलनात्मक अध्ययन इन सारी दृष्टियों से प्रासंगिक है। इस शोध कार्य को परिणामध्येयी बनाने के लिए, इसमें वैज्ञानिक पद्धति, ऐतिहासिक पद्धति, दार्शनिक पद्धति तथा तुलनात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है। नये तथ्यों का अन्वेषण और अन्वेषित तथ्यों की नई व्याख्या वैज्ञानिक पद्धति का मूल तत्त्व है | अतः इसमें सर्वोपरि वैज्ञानिक पद्धति का अवलंबन किया गया है | तथ्यों को प्रमाणित करने के लिए नियमानुसार ग्रन्थ सूची दी गई है।

अध्ययन और विवेचन की सुविधा के लिए इस शोध-प्रबंध को भूमिका और उपसंहार के अतिरिक्त छह अध्यायों में विभाजित किया गया है, जो इस प्रकार हैं -

भूमिका

अध्याय - 1 : रहस्यवाद : स्वरूप और विकास - हिंदी काव्य के सन्दर्भ में।

अध्याय - 2 : महादेवी वर्मा और रवीन्द्रनाथ ठाकुर की रहस्यवादी कविताएँ - एक परिचय।

अध्याय - 3 : प्रकृति सम्बन्धी रहस्यवाद - महादेवी वर्मा एवं रवीन्द्रनाथ ठाकुर की कविताएँ।

अध्याय - 4 : भावात्मक रहस्यवाद - महादेवी वर्मा एवं रवीन्द्रनाथ ठाकुर की कविताएँ।

अध्याय - 5 : धर्म, दर्शन एवं साधना सम्बन्धी रहस्यवाद - महादेवी वर्मा एवं रवीन्द्रनाथ ठाकुर की कविताएँ।

अध्याय - 6 : भाषिक अभिव्यंजना - महादेवी वर्मा एवं रवीन्द्रनाथ ठाकुर की रहस्यवादी कविताएँ ।

उपसंहार : मूल्य और मूल्यांकन - महादेवी वर्मा और रवीन्द्रनाथ

ठाकुर की रहस्यवादी कविताएँ।

प्रथम अध्याय में 'रहस्यवाद : स्वरूप और विकास - हिंदी काव्य के सन्दर्भ में' शीर्षक के अंतर्गत परिभाषाओं के आलोक में रहस्य और रहस्यवाद में अंतर स्पष्ट करते हुए रहस्यवाद के स्वरूप और विकास पर चर्चा की गई है। हिंदी साहित्य में रहस्यवाद की परम्परा का विवेचन विश्लेषण के साथ नव्य रहस्यवाद पर भी प्रकाश डाला गया है।

द्वितीय अध्याय - 'महादेवी वर्मा और रवीन्द्रनाथ ठाकुर की रहस्यवादी कविताएँ - एक परिचय' शीर्षक के अंतर्गत कवयित्री महादेवी और कविगुरु रवीन्द्रनाथ के पारिवारिक, शिक्षा-दीक्षा, पेशा और सामजिक परिवेश पर चर्चा की गई है । क्योंकि दोनों के भीतर के सर्जक ने कहीं न कहीं उस परिवेश से प्रभाव ग्रहण कर अपने सृजनात्मक क्षेत्र को विस्तार दिया हैं। इस सन्दर्भ में महादेवी एवं रवीन्द्रनाथ के उस परिवेश का विश्लेषण अपेक्षित है, जिसने इन दोनों के भीतर के रचनाकारों का निर्माण किया। इसके उपरांत इन दोनों के रहस्यवादी काव्य का विवेचन - विश्लेषण करते हुए दोनों के बीच साम्य वैषम्य को दिखलाया गया हैं।

तृतीय अध्याय - 'प्रकृति सम्बन्धी रहस्यवाद - महादेवी वर्मा एवं रवीन्द्रनाथ ठाकुर की कविताएँ' शीर्षक के अंतर्गत महादेवी और रवीन्द्रनाथ की रहस्यवादी कविताओं में प्रकृति का आलंबन रूप, उद्दीपन रूप, मानवीय रूप के साथ-साथ प्रकृति सम्बन्धी रहस्यवादी दर्शन पर चर्चा के साथ दोनों के प्रकृति सम्बन्धी रहस्यवादी काव्य में साम्य, वैषम्य को स्पष्ट किया गया हैं।

चतुर्थ अध्याय - 'भावात्मक रहस्यवाद - महादेवी वर्मा एवं रवीन्द्रनाथ ठाकुर की कविताएँ' शीर्षक के अंतर्गत महादेवी और रवीन्द्रनाथ की भावात्मक रहस्यवादी कविताओं में अलौकिक प्रणय भाव, करुणा, वेदना और दुखवाद पर विवेचन-विश्लेषण के साथ दोनों के भावात्मक रहस्यवादी कविताओं का लोक

कल्याणकारी पक्ष पर भी चर्चा की गई है और दोनों के भावात्मक रहस्यवादी कविताओं का साम्य वैषम्य उद्घाटित किया गया हैं।

पंचम अध्याय - 'धर्म, दर्शन एवं साधना सम्बन्धी रहस्यवाद - महादेवी वर्मा एवं रवीन्द्रनाथ ठाकुर की कविताएँ' शीर्षक के अंतर्गत धर्म, दर्शन और साधना संबंधी अर्थ और परिभाषा स्पष्ट करते हुए, दोनों के रहस्यवादी कविताओं में धर्म, दर्शन, साधना संबंधी पक्ष पर विशद् चर्चा की गई है और दोनों के बीच साम्य वैषम्य स्पष्ट किया गया हैं।

छठा अध्याय - 'भाषिक अभिव्यंजना - महादेवी वर्मा एवं रवीन्द्रनाथ ठाकुर की रहस्यवादी कविताएँ' शीर्षक के अंतर्गत, महादेवी और रवीन्द्रनाथ के रहस्यवादी कविताओं को आधार बनाकर उनके काव्य में छंद, अलंकार, शब्द चित्र, प्रतीक, रूपक, बिम्ब पर चर्चा है।

अंत में 'उपसंहार' में महादेवी वर्मा और रवीन्द्रनाथ ठाकुर की रहस्यवादी कविताओं की उपलब्धियाँ, सीमाएँ और संभावनाओं पर विचार किया गया है। इन सब के बावजूद दोनों की रहस्यवादी कविताओं के मूल में मानवतावादी दृष्टिकोण को भी रेखांकित किया गया हैं।

<u>आभार :-</u>

भारतीय संस्कृति में गुरू को ईश्वर से भी महान माना गया है। अतः सर्वप्रथम मैं सश्रद्ध आभारी हूँ आदरणीय गुरूवर प्रोफेसर दामोदर मिश्र जी का जिनके सुयोग्य निर्देशन में मैंने यह शोध-प्रबंध पूरा किया। उनकी प्रेरणा और प्रोत्साहन ने प्रतिपल मुझे प्रगति की ओर प्रेरित किया। मैं आतंरिक आभार व्यक्त करती हूँ श्रद्धेय प्रणति मिश्र जी का जिनका स्नेहाशीष मुझे सदैव प्राप्त रहा, उनके इस स्नेह और आत्मीयता ने इस शोध कार्य हेतु आत्मबल प्रदान किया। अस्तु उन दोनों के पास श्रद्धावनत् रहना मैं अपना कर्त्तव्य समझती हूँ।

शोध प्रबंध हेतु महत्वपूर्ण सुझावों के लिए मैं विद्यासागर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के डॉ० प्रमोद कुमार प्रसाद (वर्त्तमान अध्यक्ष, असोसिएट प्रोफेसर), डॉ० संजय जयसवाल (असिस्टेंट प्रोफेसर), डॉ० श्रीकांत द्विवेदी (असिस्टेंट प्रोफेसर) के प्रति हार्दिक रूप से अतिशय कृतज्ञ एवं आभारी हूँ, जिनकी प्रेरणा एवं प्रोत्साहन इस शोध-प्रबंध को पूर्ण करने में सहायक रहें है।

इस शोध प्रबंध की पूर्ति हेतु, माँ और बाबूजी के सहयोग और आशीर्वाद मेरे पाथेय रहे हैं। शब्द कभी भी उनके लिए मेरे प्यार और प्रशंसा को व्यक्त नहीं कर सकते। उनसे उऋण होना इस जन्म में संभव नहीं। आपने मेरे लिए जो कुछ भी किया उसके लिए मैं सम्मानित और आभारी हूँ।

आभारी हूँ पुत्री शैलजा का जिसने इस शोधकार्य के दौरान विभिन्न प्रकार से सहयोग और कदम दर कदम मुझे प्रेरित किया। मैं तुम्हारे बिना दुनिया की कल्पना नहीं कर सकती। तुम्हारी सहायता के लिए शब्द मेरी भावनाओं को व्यक्त नहीं कर सकते हैं।

प्रस्तुत शोध प्रबंध में निहित सामग्रियों के संकलन में विभिन्न पुस्तकालयाध्यक्षों, संस्थाओं, विद्वानों, रचनाकारों एवं मित्रों के प्रति विशेष रूप से आभारी हूँ, जिनके विचारों एवं उचित परामर्श से यह शोध-कार्य संभव हो सका।

अंततः उन प्रिय जनों को भी जिन्होंने समय-असमय मेरी आलोचना कर मुझे और भी सशक्त बनाया।

Anjali Singh

दिनांक : अप्रैल, 2021

अंजू सिंह, शोधार्थी
विद्यासागर विश्वविद्यालय, मेदिनीपुर
(प0 बंगाल)